International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

इंदौर शहर का विकास 1857 ईस्वीं से लेकर 1964 ईस्वीं तक

डॉ. माधुरी मोदी

शोधार्थी, Asst. Professor, AIMSR, इंदौर

सारांश -

प्रस्तुत शोध में इंदौर शहर का विकास 1857 ईस्वीं से लेकर 1964 ईस्वीं तक शहर के विकास क्रम को प्रस्तुत किया गया है।मुगल काल में तो शहर एक बस्ती हुआ करता था और इसका राजनीतिक व प्रशासनिक महत्त्व नगण्य था। मराठों के मालवा में आगमन के पश्चात् इंदौर एक शहर के रूप में आकर लेने लगा। मराठा सरदार मल्हार राव होल्कर ने यहाँ राजवाड़ा की नींव डाली। महाराजा तुकोजीराव होलकर द्वितीय ने यहाँ विकास की धारा को प्रवाहमान किया जो आज तक अविरल प्रवाहित है। महाराजा शिवाजीराव होलकर के काल में नगर के कला और सौंदर्य में वृद्धि हुई। महाराजा तुकोजीराव होलकर तृतीय के काल में नगर का संभावित विकास व विस्तार बहुत ही सुनियोजित तरीके से हुआ । महाराजा यशवंतराव होलकर द्वितीय के काल में नगर सर्वांगीण विकास हुआ, विशेषकर उद्योग-धंधे के क्षेत्र में इंदौर ऊंचाइयों को छूने लगा। स्वाधीनता के पश्चात् इंदौर का विकास जिस गति से हुआ है उसने उसे मध्यभारत के पटल पर दैदीप्यमान किया है।

मध्यभारत के सबसे अधिक विकासशील शहरों में इंदौर का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। मुग़लकाल में एक बस्ती के रूप में स्थापित यह शहर मराठा काल में होलकर सरदारों की राजधानी बना। मराठा सरदार मल्हारराव होलकर ने यहाँ राजवाड़ा का निर्माण करवाया जो आज इंदौर की शान और शहर का प्रमुख केंद्र है।लोकमाता देवी अहिल्या के काल में महेश्वर राजधानी थी और इंदौर सैन्य शक्ति का केंद्र हुआ करता था। महिदपुर में हुए अंग्रेज -मराठा युद्ध और मंदसौर की संधि सन् 1818 के पश्चात् इंदौर पुनः होलकरों की राजधानी के रूप में सक्रिय रहा। अंग्रेजों ने भी अपनी रेसीडेंसी यहाँ स्थापित की। तत्पश्चात जब महाराज तुकोजीराव होलकर द्वितीय 1848 ईस्वीं में सिंहासनारूढ़ हुए वो दौर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का दौर था इंदौर भी इसका साक्षी रहा। तुकोजीराव की भूमिका अप्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता

सेनानियों के पक्ष में थी। 1857 के बाद तुकोजीराव ने इंदौर के विकास की धारा प्रवाहित करना प्रारम्भ किया तब से लेकर आज तक यह धारा प्रवाहमान है।

तुकोजीराव होलकर द्वितीय (1844-1886)

"इंदौर के विकास में योगदान हेतु महाराजा तुकोजीराव (द्वितीय) नाम सम्मान से लिया जाता है। तुकोजीराव के शासनकाल में कृष्णपुरा पुल, कृष्णाबाई की छतरी व नगर में सड़के बनी "उन्होंने अपने 44 वर्ष के कार्यकाल में इंदौर को विकास के पथ पर ले कर आए।

"इंदौर अफीम व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र था। इंदौर रेसिडेंसी से भारत सरकार को भेजी गई रिपोर्ट में 1866 के इंदौर का विवरण इस प्रकार है - 'यह नगर बहुत संपन्न है। मुख्यतः अफीम उत्पादन, प्रसंस्करण व उसके व्यापार के कारण। यह इतनी बड़ी मात्रा में होता है कि नगर के हजारों लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इससे अपनी आजीविका चलाते हैं। लेकिन इस नगर की स्वच्छता व्यवस्था की शर्मनाक तरीके से उपेक्षा की जा रही है। यहाँ के शासक कहीं बार सलाह देने के बाद भी वे इस दिशा में स्थाई रूप से कुछ नहीं करते।"[1]

"मालवा व निमाड़ के कपास उत्पादन की बहुतायत को देखते हुए महाराजा तुकोजीराव द्वितीय ने कपड़ा मिल स्थापित करने का निर्णय लिया। औद्योगिक विकास हेतु सूत मिल (जिनिंग फैक्ट्री) शुरू करवाई। इस हेतु ब्रिटेन से मशीनों का आयात किया गया और खंडवा तक तो मशीनें रेल से आ सकती थी परंतु खंडवा से इंदौर के बीच रेलवे लाइन उन दिनों नहीं थी इसलिए इन दुर्गम घाटों पर से हाथियों पर लादकर मशीनों को इंदौर लाया गया।

"इस मिल के संदर्भ में तत्कालीन रेजिडेंट एच. डी. डेली ने भारत सरकार को प्रेषित रिपोर्ट में लिखा था - 'यह एक लाभदायक कार्य है, जिससे इस क्षेत्र में कपास उत्पादन बढ़ेगा और सारे मालवा में ऐसी वस्तुओं की बिक्री का इंदौर सबसे बड़ा बाजार बन जाएगा।' उस दूरदर्शी अंग्रेज अधिकारी की टिप्पणी जो उसने आज से 143 वर्ष पूर्व की थी, इंदौर नगर के लिए पूर्णतः सत्य सिद्ध हुई है।"[2]

इंदौर का अन्य प्रांतों व स्थानों से संपर्क स्थापित आसानी से हो सके इसलिए रेलमार्ग 1880 में खंडवा से इंदौर के बीच तैयार करवाया गया इस हेतु जमीन व पैसे दोनों ही अंग्रेजों को प्रदान किए गए।महाराज होल्कर ने अंग्रेज सरकार को रेलवे लाइन बिछाने के लिए एक करोड़ रुपए का कर्ज 101 साल तक के लिए देने की शर्त के साथ प्रदान किया था।[3] लालबाग की नींव भी तुकोजीराव द्वितीय के काल में ही रखी गई थी। 1849 ईस्वी में कृष्णाबाई साहेब की छत्री का निर्माण तुकोजीराव द्वितीय द्वारा करवाया गया था।

[4]"महाराजा तुकोजीराव पाश्चात्य शिक्षा व चिकित्सा प्रणाली में अधिक विश्वास नहीं रखते थे। उनकी दृढ़ धारणा थी कि भारतीयों को अपने प्राचीन वैदिक साहित्य, आयुर्वेद, ज्योतिष, व नक्षत्र शास्त्र का ज्ञान हासिल करना चाहिए, जो केवल संस्कृत के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। अंग्रेजी भाषा के लिए उनके मन में कोई अनुराग न था। पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति को यद्यपि स्थापित होने दिया'।[5]

"इंदौर डेली कॉलेज की स्थापना का प्रयास भारत के गवर्नर जनरल के सेंट्रल इंडिया के एजेंट सर हेनरी डेली ने किया था जो 1869 से 1881 तक इस पद पर इंदौर में थे ।

इस अस्वास्थ्यकर वातावरण को समाप्त करने व नगर ने स्थानीय स्वशासन विकसित करने के उद्देश्य से इंदौर में 1870 में नगर पालिका की स्थापना की गई।..... इंदौर रेजिडेंट कर्नल डेली ने नगर की स्थिति का विवरण 1873 में भारत सरकार को भेजी अपनी रिपोर्ट में इस प्रकार किया - 'स्थानीय सुधार जारी है, यद्यपि प्रगति धीमी है फिर भी प्रमुख मार्ग पक्के बना दिए गए हैं और उनके दोनों और गटरों का निर्माण किया गया है। नगर में से वाहन ले जाना आज भी बहुत मुश्किल है लेकिन मुख्य बाजार की सड़कें काफी सुधार दी गई है। यही बहुत संतोषजनक है कि इस कार्य की शुरुआत कर दी गई है और उस पर निरंतर ध्यान दिया जा रहा है। मालवा का सबसे बड़ा शहर इंदौर शीघ्र ही गंदगी और अस्वास्थ्यकर वातावरण से मुक्त हो जाएगा।"[6]

सड़कों पर आवागमन से उड़ने वाली धूल को उड़ने से रोकने के लिए सड़कों पर पानी का छिड़काव किया जाता था। रात्रि में प्रकाश के लिए सड़कों पर चिमनी वाले लैंप लगाए गये थे। "नगर में जलापूर्ति के लिए राजा की ओर से स्थान-स्थान पर बावड़ियों का निर्माण करवाया गया था।

व्यापारिक घरानों का इंदौर आगमन

"सेठ विनोदीराम लालचंद 1824 में व 1825-1830 में बख्तराम बच्छराज नामक व्यापारी इंदौर आकर बसें।महाराजा हरिराव के काल में 1844 में जयपुर के निकट फतेहपुर निवासी सेठ रामप्रताप जी इंदौर आए। 1866 में बलदेवदास गोरखराम इंदौर आकर बसे। सर सेठ हुकुमचंद जी के दादाजी श्री मानकचंदजी इंदौर आए। जोधपुर के डीडवाना से शिवाजीराव शालिग्राम का परिवार 1925 - 26 में इंदौर आया।

कानून व्यवस्था एवं न्याय

तत्कालीन समय में प्रतिष्ठित व्यक्तियों को न्यायाधीश के पद विराजित कर दिया जाता परंतु कानून का पैनी समझ न होने से साम्यता, न्याय और सद्इच्छा (Equity, Justice & Good Conscience) के आधार पर निर्णय सुनाए जाते। अक्टूबर 1872 में सर टी. माधवराव सेना व पुलिस के स्पष्ट विभाजन व पुलिस प्रशासन के पुनर्गठन की योजना तैयार की। महाराजा तुकोजीराव द्वितीय ने 1877 में एक

लाख की लागत से नई जेल का निर्माण करवाया। सती प्रथा, शिशु हत्या तथा गुलामी प्रथा पर प्रतिबंध को कड़ाई से अमल किया गया।

इंदौर में पहले फोटोग्राफर **लाला दीनदयाल** थे। "अधिकारियों, गवर्नरों और वायसराय की व्यक्तिगत रूचि के कारण आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के लिए फोटोग्राफी आवश्यक करार दे दी गई और फिर इस दिशा में उच्च स्तरीय कार्य हुआ। विदेशियों के अलावा उच्च कोटि के भारतीय फोटोग्राफर हुए। उनमें से एक थे लाला दीनदयाल।..... होलकर महाराजा द्वारा लाला जी का काम इतना पसंद किया गया कि महाराजा ने खुश होकर उन्हें जागीर प्रदान की।"[7]

ग्यारह पंच - यह एक ऐसी सभा थी जो व्यापार एवं वाणिज्य संबंधी नीति निर्धारण व दीवानी न्यायालय दोनों ही प्रकार का कार्य करती थी। इस वाणिज्य मंडल के 11 सदस्य शहर के प्रतिष्ठित नागरिक हुआ करते थे। महाराज हरिराव होलकर के समय इस संस्था की नींव पड़ी। 1855 में इसमें निम्न सदस्य थे - पदमसी नैनसी, प्रताप चंद्र, सवाई हिम्मत राम, विट्ठल महादेव, गणेश दास, किसना जी, माया राम, श्री राम, घनरुपमल, जव्हार मल, गोविंद राम, सूरत राम, सदाशिव, बद्रीनाथ, घमंडसी, जव्हार मल तथा सम सूत गंगाविसन।

होलकर सरकार ने वर्ष 1862 में ही इस आशय का एक परिपत्र जारी किया था, सरकारी भवनों व इमारतों के पास भी वृक्ष लगे हैं। इन वृक्षों को किसी भी प्रकार की क्षति नहीं पहुंचाई जानी चाहिए। इन पेड़ों की सुरक्षा की जिम्मेदारी पाटिल और इजारेदार की होगी। उस क्षेत्र का थानेदार या कचहरी का जमादार वर्ष में दो बार वृक्षों की गणना कर अपनी रिपोर्ट अमीन कार्यालय को भेजेगा, जहां से वह दरबार भेजी जाएगी। (होलकर सरकार गज़ट नं. 45, सोमवार, 23 मार्च 1874 ई.)

शिवाजीराव होलकर (1886- 1903)

महाराजा शिवाजीराव के कार्यकाल में होलकर कॉलेज, मोती बंगला आदि का निर्माण हुआ। 1903 में तुकोजीराव (तृतीय) के पक्ष में महाराज शिवाजी राव ने गद्दी छोड़ दी परंतु नगर का विकास जारी रहा। माणिक बाग पैलेस, महारानी सराय, गांधी हॉल, हाईकोर्ट भवन (पुराना), यशवंत निवास, बाद में तुकोजीराव होलकर (तृतीय) ने नए हरसिद्धि पुल का निर्माण करवाया।

"1891 में रेलवे स्टेशन के समीप महाराजा शिवाजीराव के आदेश पर 'सियागंज मंडी' का निर्माण कर मुक्त क्षेत्र के रूप में करवाया गया। उस क्षेत्र विशेष में जो भी माल आता उस पर कर नहीं लगाया जाता था, किंतु निर्धारित क्षेत्र के बाहर माल लाने पर शुल्क वसूला जाता था। इस कर मुक्ति की सुविधा के कारण ही 'सियागंज' अल्पावधि में ही राज्य का प्रमुख व्यापारिक केंद्र बन गया।"[8]

यद्यपि 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण से ही आर्थिक व औद्योगिक विकास की गति प्रारंभ हो चुकी थी और राज्य द्वारा कुछ मिल एवं उद्योग स्थापित किये गये थे । कुछ छोटे उद्योग यहां इस समय प्रचलित थे। लेकिन 20वीं शताब्दी के प्रारंभ होते ही अन्य धार्मिक व राजनैतिक गतिविधियों के साथ-साथ तीव्र गति से औद्योगिक विकास भी प्रारंभ हुआ । 1899-1900 के वर्षों में सभी मिलों में सब स्त्रोतों के द्वारा कुल आय 317419-11-6 रू. और व्यय रू. 268097-4-6 तथा शुद्ध लाभ रू 49322-7-0 हुआ।[9] 19 दिसम्बर 1900 तक कस्टम विभाग के किसी भी अधिकारी द्वारा विभाग की व्यवस्था नहीं की गई थी। कस्टम पर नियंत्रण विभिन्न जिलों के सूबे करते थे लेकिन इंदौर राज्य का जिला एक अधिकारी मुन्तजिम सायर के नियंत्रण में 20 दिसम्बर 1900 तक था। बाद में नया पद नजीम देशवन कमिश्नर ऑफ़ कस्टम्स स्वीकृत किया गया जिसके नियंत्रण में पूर्व कस्टम विभाग होता था और यह उम्मीद थी कि यह विभाग भविष्य में कुछ ही समय में राज्य के लिये लाभदायक सिद्ध होगा और जनता के लिये ज्यादा से ज्यादा सुविधाजनक होगा।[10]

1909-10 में पूरे इंदौर राज्य में 58 औद्योगिक कारखाने थे जिनमें 39 जीनिंग फैक्ट्री, 11 कॉटन प्रेस व 2 कपड़ा बुनने की मिल थी। शेष फुटकर उद्योग धंधे के कारखाने थे।

“हिंदुस्तान में संभवतः प्रथम गजेटियर के संपादन का श्रेय अंग्रेजी विद्वान डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर को जाता है। जिसने इंपीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया की सीरीज को संपादित कर वर्ष 1886 में प्रकाशित करवाया था। इस श्रृंखला की सातवीं जिल्द के पृष्ठ 9 - 10 पर इंदौर रेसिडेंसी चिकित्सालय के विषय में वे लिखते हैं - इंदौर रेसिडेंसी चिकित्सालय अपने ढंग की अत्यंत उपयोगी तथा सफल संस्थाओं में से एक है। बड़े ऑपरेशनों के लिए इसकी अपनी ख्याति है। ऐसे ऑपरेशनों की संख्या 500 प्रतिवर्ष है। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में इसकी विशेषता महिलाओं की कटी नाक का पुनर्रोपण है। रियासतों में पति ऐसी पत्नियों की नाक काट लिया करते हैं, जिनके चरित्र पर उन्हें संदेह होता है। महिलाएं तब अपनी नाक को सुधारने के लिए चिकित्सालय की ओर दौड़ती थी कभी-कभी तो वह कटी हुई नाक को रुमाल में सावधानीपूर्वक लपेट कर ले आती थी। नाक का पुनर्रोपण सफल हो जाया करता था इनके अतिरिक्त शल्यक्रिया में भी चिकित्सालय ने पूरे सेंट्रल इंडिया एवं राजपूताना में काफी ख्याति पाई थी।”[11]

शिव विलास पैलेस, सुख निवास पैलेस, हवा बंगला, फूटी कोठी आदि का निर्माण भी महाराजा शिवाजीराव द्वारा करवाया गया। नगरों को सौंदर्यीकृत करने में महाराजा शिवाजीराव की विशेष भूमिका रही।शासकीय कार्यों हेतु कार्यालय एक ही परिसर में हो, इस उद्देश्य से सचिवालय भवन ‘मोती बंगला’ का निर्माण महाराजा शिवाजीराव होलकर ने करवाया। वर्तमान में यहाँ मध्य प्रदेश के वाणिज्यिक कर आयुक्त, श्रम आयुक्त, संभागीय लोकायुक्त का कार्यालय लगता है। 1901 में चंद्रभागा पुल का राज्य अभियंता रायबहादुर

बाबूमल तथा प्रधानमंत्री रायबहादुर नानकचंद जी के निर्देशन में पूर्ण हुआ, इससे इंद्रेश्वर मंदिर और नंदलालपुरा के बीच संपर्क साधने में आसानी होने लगी।

तुकोजीराव होलकर तृतीय (1903-1926)

"होलकर नरेश तुकोजीराव तृतीय ने इस बात की ओर सर्वाधिक ध्यान दिया कि नगर का संभावित विकास व विस्तार बहुत ही सुनियोजित तरीके से हो। उन्होंने नगर विकास विशेषज्ञों श्री लेनचेस्ट व श्री पैट्रिक गिडिस को इस सिलसिले में इंदौर आमंत्रित भी किया। श्री गिडिस ने अपनी रिपोर्ट में नगर के भावी विकास की विस्तृत योजनाएं बनाई और अपने सुझाव भी दिए। यह रिपोर्ट दो जिल्दों में प्रकाशित भी हुई।"[12] मुंबई की एक कंपनी ने 'दि इंदौर मालवा यूनाइटेड मिल्स लिमिटेड' के नाम से एक मिल की स्थापना की। मालवा मिल की 1909 की स्थापना के बाद हुकुमचंद मिल 1916 में, स्वदेशी कॉटन एंड फ्लोर मिल 1921 में, कल्याण मिल 1923 में, राजकुमार मिल 1924 में तथा नंदलाल भंडारी मिल 1925 ईस्वी में प्रारंभ हुई। रानी सराय - 1907 में महारानी वाराणसी बाई की स्मृति में धर्मार्थ इस सराय का निर्माण करवाया गया। जो आज पुलिस अधीक्षक कार्यालय है।

यशवंतराव होलकर द्वितीय (1926-1948)

1929 में नगर विकास ट्रस्ट ने मनोरमागंज, सुखलिया योजना, स्नेहलता गंज, प्रिंस यशवंत रोड, बिस्को पार्क आदि के विकास की योजना में तैयार की। ।1935 में विमानतल का निर्माण कार्य शुरू किया गया, 26 जुलाई 1946 को यह वायु मार्ग बनकर तैयार हुआ। आज यह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है।महाराजा यशवंतराव होलकर के द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र में एम. वाय. अस्पताल के निर्माण में उदारता पूर्वक तो डाल दिया गया, उससे सात मंजिला यह "वास्तु विन्यास" को सुंदर उदाहरण बन कर तैयार हुआ, "राज्य का दुर्भाग्य रहा कि महाराज को राज्य सन्यास लेना पड़ा। इसके बाद के 4 वर्षों में कार्यभार संभालते हुए कौंसिल ने अनेक सुधार कार्य किए।

इंदौर शहर का विकास स्वाधीनता मिलने के पश्चात्

1950 के बाद लगभग 800 फैक्ट्रियों की शुरुआत हुई। क्रिकेट जगत में इंदौर के पद्मश्री कैप्टन मुश्ताक अली, मेजर एम. एम. जगदाले, कर्नल सी. के. नायडू, नरेंद्र मेनन, विनोद नारंग, गुलरेज अली, अशोक जगदाले विजय नायडू, चंदू सरवटे, हीरालाल गायकवाड़, संजय जगदाले, नरेंद्र हिरवानी, अभय खुरासिया चर्चित है।होलकर रियासत द्वारा टेबल टेनिस के नगर में प्रतिवर्ष टूर्नामेंट आयोजित करवाए जाते। अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी जाल गोदरेज का संबंध इंदौर से ही है। श्री अभय छजलानी द्वारा भी अखिल भारतीय

टेबल टेनिस एसोसिएशन के पदाधिकारी के रूप में इस खेल को बहुत प्रोत्साहित किया गया। और अभय खेल प्रशाल इसका एक जीता जागता उदाहरण है।

जिला न्यायालय न्यायालय भवन का निर्माण महाराजा तुकोजीराव तृतीय के काल में मुंबई की चाल्स स्टीवेन्स एंड कंपनी द्वारा 1910 में ढाई लाख की लागत से किया गया था। अग्निरोधी बनाने के उद्देश्य से इसका निर्माण भारतीय वास्तु शैली में पत्थरों से करवाया गया था। 1961 में रविंद्र नाट्य गृह की नींव रखी गई जो 1200 से अधिक व्यक्तियों की बैठक क्षमता रखता है, और इंदौर में शैक्षणिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र है।1963 में 20 हजार दर्शकों के बैठने की क्षमता वाले नेहरू स्टेडियम का निर्माण करवाया गया।

नगर विकास योजना के बारे में पैटिक गिडिस रिपोर्ट - (जिल्द 1 पृष्ठ - 32) 1 में लिखा है - इंदौर जो विकासशील नगर है, अपनी प्रारंभिक विकासवादी व्यवस्था में औद्योगिकरण की उत्पन्न बुराइयों से सुनियोजित औद्योगिक योजना द्वारा बच सकता है। जुने मिल की स्थापना के समय इसी सिद्धांत को ध्यान में रखा गया था जिससे अभी भी कोई हानि नहीं हैं। नवीन औद्योगिक बस्ती के लिए अगर का उत्तर - पूर्वी क्षेत्र तथा रेलवे एवं न्यू देवास रोड के मध्य का क्षेत्र सर्वश्रेष्ठ है। " आज की तारीख तक यही नगर निगम स्वच्छता अभियान में भारत वर्ष में 6 बार नंबर वन रह चुका है और शहर स्वच्छता की दौड़ में आज भी नंबर वन पर हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. छजलानी अभय, अपना इंदौर भाग-1, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर, 2015, पृ. 75
2. छजलानी अभय, अपना इंदौर भाग-1, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर, 2015, पृ. 115
3. छजलानी अभय, अपना इंदौर भाग-2, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर, 2016, पृ. 1
4. https://www.naidunia.com/madhya-pradesh/indore-holkars-make-indore-their-state-capital-before-200-years-in-january-1533295
5. छजलानी अभय, अपना इंदौर भाग-1, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर, 2015, पृ. 62-63
6. छजलानी अभय, अपना इंदौर भाग-1, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर, 2015, पृ. 76
7. छजलानी अभय, अपना इंदौर भाग-1, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर, 2015
8. छजलानी अभय, अपना इंदौर भाग-1, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर, 2015, पृ. 134
9. रिपोर्ट फॉर दी फाल्सी इयर 1309 एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट 1899-1900, पृष्ठ 17
10. इंदौर प्रशासन की रिपोर्ट फाल्सी इपर 1310 1900-1918, पृष्ठ 14

11. छजलानी अभय, अपना इंदौर भाग-1, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर, 2015, पृ. 142
12. छजलानी अभय, अपना इंदौर भाग-1, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर, 2015, पृ. 30